स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता

[अ]मुकेश कुमार शर्मा, [ब]प्रमिला दुबे
[अ]शोधार्थी (शिक्षा विभाग) राजस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर (राज.)
[ब]निर्देशिका, (डीन, शिक्षा विभाग) राजस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर (राज.)

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र ''स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता '' का उद्देश्य स्वामी विवेकानन्द के विभिन्न शैक्षिक विचारों की वर्तमान में उपयोगिता को परिलक्षित करना है। प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि को आधार बनाया गया है तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के द्वारा निष्कर्ष निकाले गये है। स्वामी विवेकानन्द जी ने आधारभूत भारतीय जीवन मूल्यों एवं जनशिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में तर्कसंगत व्याख्या की हैं। स्वामी जी की शिक्षा में परम्परा, आधुनिकता, पूर्व–पश्चिम आध्यात्मिकता तथा वैज्ञानिकता का सामंजस्य एवं समन्वय विशेष उल्लेखनीय हैं। इस शिक्षा के द्वारा उन्होंने समाज सेवा एवं जनशिक्षा, आध्यात्मिक एवं धार्मिक पुनरुत्थान व जागृति को प्रमुख ध्येय माना हैं। उन्होंने अपने शिक्षा दर्शन में अपनी ओजस्वी वाणी से भारतीय धर्म–साधना एवं ज्ञान–विज्ञान के चिरस्थायी मूल्यों की उपयोगिता का जयघोष किया। निष्कर्ष में पाया गया कि वर्तमान शोध अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक शिक्षा को औचित्य पूर्ण बनाने के लिए स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों तथा मूलभूत सिद्धान्तों का अमूल्य योगदान हैं। स्वामी जी की शिक्षा योजना के बिना आधुनिक शिक्षा योजना की स्थिति जड़ रहित वृक्ष की भांति होगी ।

कीवर्डसः स्वामी विवेकानन्द, शैक्षिक विचार, वर्तमान परिप्रेक्ष्य।

▪ प्रस्तावना :–

शिक्षा का अध्ययन यदि इतिहास की आँखों से किया जाये तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली को दि शा मिल सकती हैं। इतिहास का परिप्रेक्ष्य शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन के लिए वस्तुनिष्ठता प्रदान करता हैं। शिक्षा के विकास , शिक्षा के वंशक्रम और शिक्षा की संस्कृति के अध्ययन एवं विचार के नये द्वार खोलता हैं। वर्तमान शिक्षा की जड़े अतीत में विद्यमान थी। गौरवपूर्ण अतीत से ही शिक्षा का वर्तमान अलौकिक होकर भविष्य के लिए सम्भावनायें प्रदान करता हैं।

शिक्षा के इस वर्तमान युग में पश्चिमीकरण के द्वारा प्राच्य विद्या, भारतीय साहित्य एवं संस्कृति पर कुठाराघात किया जा रहा हैं। भारतीय मनीशियों की दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य मनुश्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में उत्तम तत्त्वों का विकास करना हैं। अतः सच्ची शिक्षा वह हैं जो व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, नैतिक ,और आध्यात्मिक विकास कर व्यक्ति में सद्गुण, साहस, शक्ति, आत्मानुभव, सेवा आदि गुणों का विकास करें। वर्तमान शिक्षा पद्धति इन उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा शिक्षा का राष्ट्रीय रूप लेने में असमर्थ रही हैं। वर्तमान में हमारी समाज–व्यवस्था एक ऐसी स्थिति में हैं, जहाँ अधिकांश भारतीय जनता स्वार्थ व निराशा का जीवन व्यतीत कर रही हैं। आज जब व्यक्ति जीवन में भ्रान्ति और क्लेश से पीड़ित हैं, जब समाज भ्रष्टाचार, दुराचार और अत्याचार की व्याधियों से ग्रस्त हैं, जब राजनीति मनुष्य के जीवन को उभारने–सँवारने के बजाय नष्ट–भ्रष्ट कर रही है। ऐसे समय में शिक्षा के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द जी के आध्यात्मिकता व भारतीयता के ताने–बाने से गूँथे हुये अमृतमय विचार सदैव अनुकरणीय हैं तथा भारतीय जनता में एक नई

चेतना, उमंग व आत्मविश्वास भरते हैं। इस सन्दर्भ में मेरा पूर्ण विश्वास है कि समाज में फैले हुये अविश्वास व बुराईयों तथा शिक्षा व दर्शन में फैले हुये दोषों को दूर करने में स्वामी विवेकानन्द जी के विचार सहायक सिद्ध हैं। स्वामी जी सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण की बात करते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने स्त्री–पुरुष, धनी–निर्धन सभी में शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया हैं। उनकी शिक्षा–प्रणाली भारत की दार्शनिक और आध्यात्मिक परम्परा के अनुरूप थी। वे स्वदेशी के जबर्दस्त हिमायती थे और पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण के विरुद्ध थे।

युवक–युवतियों के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करते समय उन्होंने साहस, आत्मविश्वास, एकाग्रता, अनासक्ति तथा उच्च नैतिक चरित्र के गुण निर्माण करने पर विशेष रुप से ध्यान दिया। उन्होंने शिक्षकों को शिक्षा देने के कार्य को व्यवसाय बनाकर एक मिशन के रूप में लेने की सलाह दी। उन्होंने सब कहीं संतुलित और समन्वयवादी दृष्टिकोण रखा। महान् आदर्शवादी होते हुए भी उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार अत्यधिक व्यावहारिक और यथार्थवादी हैं। उन्होंने तत्कालीन भारत की परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा–प्रणाली की ऐसी रूपरेखा उपस्थित की जिससे देश स्वतंत्रता प्राप्त करके प्रगति के मार्ग में आगे बढ़े। उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार आज भी समकालीन शिक्षा–प्रणाली के सुधार के लिए मार्ग–निर्देशक का कार्य कर सकते हैं। उनकी भाषा तथा व्याख्या इतनी सरल रही है कि प्रत्येक व्यक्ति को उनके विचार समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। स्वामी जी के शैक्षिक विचार प्राचिन तथा आधुनिक के समन्वय हैं।

स्वामी जी ने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर ध्यानपूर्वक चिन्तन किया है और चरित्र को उन्होंने प्रमुखता दी हैं। चरित्र ही मानव जीवन का सूत्राधार है और वहीं मनुष्य को बड़े–बड़े कार्य करने की शक्ति प्रदान करता हैं। वे युवाओं के प्रेरणा–स्रोत हैं। स्वामी जी की शिक्षा का व्यावहारिक पक्ष विद्यमान वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा के मापदण्ड बदल जाने के कारण उभर नहीं पाया हैं। हमें उन मापदण्डों के अनुसार पूर्णत्व को प्राप्त करना होगा तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की उपयोगिता एवं महत्व को समझना होगा।

- **अध्ययन का औचित्य :–**

दुर्भाग्यवश आज अधिकांश भारतीय पश्चिम के रंग में इतने रंग चुके है कि भारतीय संस्कृति की महानता को खोते जा रहे है। रामकृष्ण परमहंस व स्वामी विवेकानन्द जैसे दार्शनिक और शिक्षा शास्त्रियों ने विश्व के सामने भारत की महानता को प्रकट किया था। स्वामी जी ने विदेशों में जाकर भारत के महान् चिन्तन और दर्शन की छाप छोड़कर भारत को विश्व के आध्यात्मिक गुरु की पदवीं पर पुनर्प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक उल्लेखनीय भूमिका निभायी । इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचारों ने ही मुझे यह लघु शोध प्रबन्ध स्वामी जी के शैक्षिक विचारों की उपयोगिता पर लिखने की प्रेरणा दी हैं।

- **शोध प्रश्न :–**

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्ता द्वारा निम्नलिखित शोध प्रश्न को ध्यान में रखा गया है–

  - क्या स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की विद्यार्थियों, शिक्षकों, विद्यालयों हेतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता व प्रासंगिकता है?

- **अध्ययन के उद्देश्य :–**

शोधार्थी द्वारा शोध कार्य को सही चरणों में पूर्ण करने के लिए उद्देश्यों का निर्धारण इस प्रकार किया गया है–

- स्वामी विवेकानन्द के दर्शन में शिक्षा की अवधारणा को जानना ।
- स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा–दर्शन की जानकारी प्राप्त करना ।
- स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा के उद्देश्यों की व्याख्या करना।
- स्वामी विवेकानन्द के द्वारा शिक्षक व विद्यार्थी की अवधारणा एवं आवश्यकता की जानकारी प्राप्त करना ।
- स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक पाठ्यक्रम की जानकारी प्राप्त करना ।
- स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों की व्याख्या करना।
- स्त्री शिक्षा, मानवतावादी शिक्षा एवं शिक्षा के स्वरूपों के बारे में जानकारी प्राप्त करना ।
- वर्तमान समय में स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक विचारों की उपयोगिता का अध्ययन करना ।

▪ शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध विषय के अध्ययन हेतु ***ऐतिहासिक अनुसंधान विधि*** की सहायता ली हैं।

▪ वर्तमान शोध अध्ययन के निष्कर्ष :–

वर्तमान शोध अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक शिक्षा को औचित्य पूर्ण बनाने के लिए स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों तथा मूलभूत सिद्धान्तों का अमूल्य योगदान हैं। स्वामी जी की शिक्षा योजना के बिना आधुनिक शिक्षा योजना की स्थिति जड़ रहित वृक्ष की भांति होगी । आज हमें इस बात का अनुभव हो चला हैं कि हमारे देश में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है वह जीवन से पूरी तरह विमुख है। हम उसे जीवन से पूरी तरह ओतप्रोत बनाना चाहते है स्वामीजी की शिक्षा के उद्देश्य, सिद्धान्त वहीं हैं जो आज की शिक्षा के हैं। वे पूर्णता को प्राप्त करना, आत्मबल को बढ़ाना, चरित्र का निर्माण करना, जन शिक्षा को बढ़ावा देना, स्त्री शिक्षा को अति महत्त्वपूर्ण बनाना, बालक–बालिकाओं को समान शिक्षा प्रदान करना आदि को महत्त्व देते थे। आज की परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा बदल गई हैं लेकिन उसका मुख्य आधार वहीं है। नींव वहीं पुरानी शिक्षा पर आधारित है। आज की इन परिस्थितियों में छात्र–शिक्षक और अभिभावक मिल–जुलकर ही शिक्षा के लिए क्रान्तिकारी वातावरण तैयार कर सकते है। सरकार या अन्य किसी संस्था से शिक्षा याचना करनें से काम नहीं चलेगा। हम सब तो यह चाहते है कि सामाजिक वातावरण इस प्रकार तैयार किया जाए कि सभी प्राणी मिलकर आपस में सलाह कर शिक्षा का मंगलाचरण करें । स्वामीजी द्वारा प्राविधिक एवं तकनीकी शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है जो कि वर्तमान समय में बहुत प्रचलित हैं जिससे देश का विकास होगा तथा देश आगे बढ़ेगा। वर्तमान समय में छात्र उद्दण्ड तथा हिसंक प्रवृत्ति के होते जा रहें है जिसका उपाय एक मात्र स्वामी जी के विचार हीं है । बालक का चारीत्रिक विकास होना अत्यन्त आवश्यक हैं जिससे बालक स्वयं को नियन्त्रित कर सकेगा और इसी प्रकार प्रत्येक बालक का चारीत्रिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास होगा तो देश में ऐसा परिवर्तन होगा जिसकी हमें वर्तमान समय में बहुत आवश्यकता हैं । शिक्षा समग्र समाज का अंग है अतः शिक्षा में क्रान्ति के बाद जो शिक्षा हो उनमें विद्यार्थी परायापन महसूस नहीं करेगा तथा उससे ऐसा समाज बनेगा जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक स्त्री को अपना हक मिल सकें।

▪ शैक्षिक फलितार्थ :–

इस अनुसंधान की विद्यार्थी, शिक्षक व विद्यालय हेतु उपयोगिता इस प्रकार हैं।

विद्यार्थियों के लिए –

विद्यार्थी स्वावलम्बी बनने की भावना उत्पन्न करके श्रम के महत्त्व को जानेगें। विद्यार्थी नैतिकता व सामाजिकता के गुणों को बढ़ायेगें। विद्यार्थियों को प्राविधिक व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करना चाहिए तथा आध्यात्मिक शिक्षा पर भी बल देना चाहिए। विद्यार्थियों को वेतनभोगी प्रवृत्ति त्यागकर सृजनात्मक व चिन्तन अभिवृत्ति को अपनाकर अपने आत्मबल, चरित्र तथा आत्मविश्वास पर बल देना चाहिए।

शिक्षकों के लिए –

शिक्षा प्रणाली को प्रभावशाली बनाने में शिक्षक उच्चतम शिक्षण बिन्दुओं को शिक्षण में अपनायेंगे तथा साथ ही बालक की जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करेंगे। बालक की क्षमता को जानकर उनके अनुरूप वातावरण बनायेगें । शिक्षक परिणामात्मक वृद्धि के प्रलोभन का त्याग कर गुणात्मक परिणाम प्रदान करने का प्रयत्न करेंगे ।

विद्यालयों के लिए –

विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की सहशैक्षणिक गतिविधियों के द्वारा विद्यार्थियों में नैतिकता, सामाजिकता, जिज्ञासु प्रवृत्ति, सृजनात्मकता व चिन्तन शक्ति को विकसित करने के प्रयास किये जा सकेंगे ।

▪ भावी शोध हेतु सुझाव :–

वास्तव में स्वामी विवेकानन्द जी पर अनुसंधान कार्य तो बहुत हुआ हैं परन्तु, प्रस्तुत शोध अध्ययन के अलावा भविष्य में स्वामी विवेकानन्द जी के शिक्षा दर्शन पर और भी शोध कार्य किये जा सकते हैं जिनके के लिये कुछ सुझाव इस प्रकार हैं–

- स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का अन्य शिक्षाविदों जैसे–महात्मा गाँधी, तिलक, महर्षि अरविन्द, कोटिल्य आदि के शैक्षिक दर्शन से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।
- वर्तमान शोध कार्य को विस्तृत रूप में एम.फिल तथा पी.एच.डी. स्तर पर प्रस्तुत किया जा सकता हैं।
- स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के अलावा राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं आर्थिक विचारों अध्ययन किया जा सकता हैं।
- स्वामी जी के भविष्य दर्शन पर वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, वेदान्तिक दर्शन–विज्ञान एवं व्यावहारिकता का अध्ययन किया जा सकता हैं।
- स्वामी विवेकानन्द के मूर्ति पूजा के रहस्य का अध्ययन किया जा सकता हैं।
- स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्र निर्माता के रूप में अध्ययन किया जा सकता हैं।
- विदेशों में स्वामी विवेकानन्द एवं उनकी आध्यात्मिक संस्था रामकृष्ण मिशन के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता हैं।
- स्वामी विवेकानन्द के अद्वैत वेदान्त का आधुनिक वैश्विक मूल्य संकट एवं नैतिकता की पुकार के संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता हैं।
- रामकृष्ण मिशन का आधुनिक विश्व के संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता हैं।
- भारतीय शिक्षा दर्शन में स्वामी विवेकानन्द के योगदान का आलोचनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।

- स्वामी विवेकानन्द के अद्वैत वेदान्त का आधुनिक नाभिकीय भौतिकी के साथ प्रासंगिकता का अध्ययन किया जा सकता हैं।
- स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा–दर्शन का स्त्री शिक्षा के संदर्भ में व्यापक अध्ययन किया जा सकता हैं।
- स्वामी विवेकानन्द की शिक्षण विधियों की आधुनिक युग में सार्थकता का अध्ययन किया जा सकता हैं।
- स्वामी जी के शिक्षा व दर्शन का समाज संगठन में भूमिका का अध्ययन किया जा सकता हैं।
- स्वामी विवेकानन्द के जीवन–दर्शन का नव युवकों के सन्दर्भ में आदर्श रूप का अध्ययन किया जा सकता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पाण्डेय, रामशकल.(1999). *विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा–शास्त्री,* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.

पाण्डेय, रामशकल.(1978). *शिक्षा के सैद्धान्तिक आधार,* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.

मजूमदार, सत्येन्द्रनाथ.(1999). *विवेकानन्द चरित,* रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण आश्रम मार्ग, धन्तोली, नागपुर.

मिश्र, आत्मानन्द.(1976). *भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक,* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.

शर्मा, आर.ए.(2009). *शिक्षा के दार्शनिक विचार एवं सामाजिक मूल आधार,* आर लाल बुक डिपो, मेरठ.

रायजादा, बी.एस.(1997). *शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्त्व,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादनी,जयपुर.

शेखावत, महेन्द्र.(1986). *आधुनिक चिन्तन में वेदान्त,* मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल.

सक्सैना, लक्ष्मी.(1983). *समकालीन भारतीय दर्शन,* उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ.

स्वामी विवेकानन्द.(1998). *द कम्पलीट वर्क्स ऑफ स्वामी विवेकानन्द,* 5–डिही एण्टाली रोड, कलकत्ता.

अभयंकर, एस.बी.(1987). *ए कम्पेरेटिव इन डीटथ एण्ड क्रिटिकल एनेलाइज ऑफ स्वामी विवेकानन्द*

एजूकेशन थोट एण्ड फिलोसोफीक, (पी.एच.डी.). पूना विश्वविद्यालय, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन.

पत्रिका

शिविरा पत्रिका, जनवरी 2011, अंक–7, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, बीकानेर.

राजस्थान पत्रिका, जनवरी,12, 2013.

दैनिक भास्कर , जनवरी12, 2013.